छायावादी काव्यः विश्लेषणात्मक विवेचन और अनुशीलन

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

छायावाद हिंदी कविता के इतिहास का प्रसिद्ध आंदोलन है, जिसका विकास द्विवेदी युगीन काव्य की प्रतिक्रिया के स्वरूप हुआ। सामान्यतः छायावाद की समय सीमा 1918 से 1936 के बीच मानी जाती है। छायावाद के प्रमुख चार स्तंभ हैं- महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत। छायावाद के मूल्यांकन और इसके नामकरण को लेकर विभिन्न विद्वानों में मतभेद है।

कुछ विद्वान छायावाद को खड़ी बोली काव्य का स्वर्ण युग मानते हैं तो कुछ विद्वानों के अनुसार स्वाधीनता आंदोलन के सघनतम काल में रचे जाने के बावजूद छायावाद राष्ट्रीय चेतना से कटा होने के कारण विशेष सम्मान का पात्र नहीं है।

उल्लेखनीय है कि छायावाद शब्द का सबसे पहले प्रयोग मुकुटधर पांडेय ने किया। इन्होंने अपने निबंधों में छायावाद की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है - वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य चेतना, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य, अस्पष्टता। इसके बाद विभिन्न विद्वानों ने छायावाद शब्द की व्याख्या के संदर्भ में अलग-अलग मत दिए।

शोधपत्र छायावाद के संक्षिप्त इतिहास, छायावादी काव्य के प्रमुख चार स्तम्भों, छायावाद की विशेषताओं और प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालता है एवं साथ ही हिंदी साहित्य में छायावादी काव्य के महत्व और प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

मुख्य शब्दः छायावाद, स्तम्भ, प्रवृत्ति, आंदोलन, स्वर्णयुग, वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य-चेतना, रहस्यवादिता, शैलीगत-वैशिष्ट्य, अस्पष्टता ।

प्रस्तावना

छायावाद का विकास द्विवेदी युगीन कविता के उपरांत हिंदी में हुआ । मोटे तौर पर छायावादी काव्य की समय सीमा 1918 से 1936 ईस्वी तक मानी जा सकती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी छायावाद का प्रारंभ 1918 ईस्वी से माना है, क्योंकि छायावाद के प्रमुख कवियों पंत, प्रसाद, निराला ने अपनी रचनाएं इसी वर्ष के आसपास लिखनी प्रारंभ की थी 1918 में प्रसाद का 'झरना प्रकाशित हो चुका था तथा निराला की प्रसिद्ध कविता 'जूही की कली' 1916 में प्रकाशित हुई थी पंथ के 'पल्लव' की कुछ कविताएं भी 1918 में प्रकाशित हो चुकी थी। प्रसाद की 'कामायनी' 1935 में प्रकाशित हुई तथा प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना 1937 में हुई। इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर छायावाद की अंतिम सीमा 1936 ई. मानना समीचीन है।

छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रतिक्रिया स्वरुप हुआ, क्योंकि द्विवेदीयुगीन कविता विषयनिष्ठ, वर्णन प्रधान और स्थूल थी, जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पना प्रधान एवं सूक्ष्म है। प्रारंभ में 'छायावाद' का प्रयोग व्यंग्य के रूप में उन कविताओं के लिए किया गया जो अस्पष्ट थी, जिनकी 'छाया' (अर्थ) कहीं और पड़ती थी किंतु कालांतर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी।

छायावाद संबंधी विभिन्न साहित्यकारों के उदगार

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

छायावाद से लोगों का क्या मतलब है, कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में,जहां उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है अर्थात् जहां कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।... छायावाद एक शैली विशेष है,जो लाक्षणिक प्रयोगों,अप्रस्तुत विधानों और अमूर्त उपमानों को लेकर चलती है।" दूसरे अर्थ में उन्होंने छायावाद को चित्र-भाषा-शैली कहा है। आचार्य शुक्ल छायावाद के प्रति सकारात्मक नहीं थे और प्रायः इसे हिंदी साहित्य की नकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में देखा।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

छायावाद और रहस्यवाद पर्यायवाची नहीं हैं। छायावाद का एक अंश भले ही रहस्यात्मक हो किंतु छायावाद की वास्तविक पहचान उस अंश से होती है जो राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रश्नों से जूझ रहा था। इसके अलावा उन्होंने दावा किया कि छायावाद में जो रहस्यवाद है वह भी मध्ययुगीन रहस्यवाद से काफी अलग है।

डॉ. नगेंद्र

छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति हैं, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।

डॉ. नामवर सिंह

छायावाद वस्तुतः कई काव्य प्रवृत्तियों का सामूहिक नाम है और वह उस "राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति" है जो एक ओर पुरानी रुढ़ियों से मुक्ति पाना चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।

जयशंकर प्रसाद

जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिंदी में उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया ध्वन्यात्मकता ,लाक्षणिकता, सौंदर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएं है।

डा. रामकुमार वर्मा

परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।

महादेवी वर्मा

छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीथ है .....उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।

छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएं

सौंदर्य चेतना

सौंदर्य चेतना को छायावाद की सबसे प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धि माना गया है। छायावादी साहित्यकारों की सौंदर्य चेतना उदार एवं उदात्त है। जय शंकर प्रसाद की निम्नलिखित पंक्तियाँ नेत्रों के सौंदर्य एवं उसके प्रभाव को सटीक रूप में प्रकट करती हैं और उनकी सौन्दर्य चेतना को स्पष्टतः दर्शाती हैं-

" कमल से जो चारू दो खंजन प्रथम।
पंख फड़काना नहीं थे जानते।।
चपल चोखी चोट कर अब पंख की।
विकल करते भ्रमर को आनंद से।।"

रहस्य भावना

छायावादी काव्य की रहस्यवाद की प्रवृत्ति के कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल छायावाद को रहस्यवाद का नाम देते हैं। अधिकांश छायावादी कवि किसी अज्ञात सत्ता में अपना विश्वास प्रकट करते हुए अपने काव्य में उसका बखान करते हैं ।प्रसिद्द प्रकृति-कवि सुमित्रा नंदन पंत की कविता 'मौन निमंत्रण' में प्रस्तुत अभिव्यक्ति इसका उत्कृष्ट उदाहरण है -

"न जाने कौन आए द्युतिमान
जान मुझको अबोध, अज्ञान,
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूँक देते छिद्रों में गान;
अहे सुख-दुःख के सहचर मौन
नहीं कह सकता तुम हो कौन!"

राष्ट्र प्रेम

छायावादी काव्य राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत है। जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित नाटकों की गीत योजना राष्ट्रप्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति का उदाहरण है। भारत के अतीत गौरव के चित्र का अंकन करने वाली और भारत देश की महिमा का बखान करने वाली निम्न लिखित पंक्तियाँ राष्ट्रप्रेम उदगार की अद्भुत मिसाल है-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"

दुख और वेदना

छायावादी काव्य दुख और वेदना के भावों की अभिव्यक्ति से ओतप्रोत है। इस दृष्टि से महादेवी वर्मा का नाम छायावादी कवियों में सर्वोपरि है। उनकी निम्नलिखित पंक्तियाँ अनेकों दशक बीतने के बाद भी आज उनकी विरह वेदना के सन्दर्भ में उद्धृत की जाती हैं-

" मैं नीर भरी दुख की बदली,
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली"

आत्माभिव्यंजना

छायावादी काव्य के अंतर्गत कवियों के अपने व्यक्तिगत जीवन को प्रस्तुत किया है जिसे विभिन्न सन्दर्भों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। छायावादी कविता में वैयक्तिक सुख-दुख की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। उदाहरण के लिए, निराला की अनेकों कविताऐं उनके व्यक्तिगत जीवन के सत्य की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम की हताशा - निराशा में कवि के अपने जीवन की निराशा भी अभिव्यक्त हुई है। उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध को झेलना पड़ा उसकी गूँज निम्न पंक्तियों में है-

" धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।।"

प्रकृति-चित्रण

प्रकृति चित्रण छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। छायावादी कवि प्रकृति के कुशल चितेरे हैं और प्रकृति के विभिन्न रूपों को साकार रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ और सक्षम हैं। प्रकृति को मानवीकृत करके उसको हंसते- रोते हुए भी प्रस्तुत किया है। प्रकृति चित्रण में पंत का कोई जबाब नहीं जिन्होंने प्रकृति को ही अपनी काव्य प्रेरणा माना है। 'मोह' नामक कविता में वे स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि नारी सौंदर्य में आकर्षण होता है, पर वह इतना नहीं कि प्रकृति सौंदर्य की उपेक्षा करवा सके -

" छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया।
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन,
भूल अभी से इस जग को "

शिल्पगत प्रवृत्तियाँ

प्रतीकात्मक और बिंबात्मक शैली के साथ लाक्षणिक भाषा का प्रयोग छायावाद की प्रमुख शिल्पगत प्रवृत्तियाँ हैं। छायावाद में तीन नए अलंकारों - विशेषण विपर्यय, मानवीकरण और ध्वन्यर्थ व्यंजना- के साथ ही निराला ने 'मुक्त छंद' तो प्रसाद ने 'आँसू छंद' जैसे नए छंदों में रचना की।

" है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार।
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यान मग्न केवल जलती मशाल"

छायावाद के चार स्तम्भ

छायावाद के चार स्तंभ जिनके काव्य सृजन और योगदान पर छायावादी काव्य स्थाई रूप से टिका हुआ है, वे हैं - महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत। ये चारों कवि छायावादी कवि के रूप में अमरता प्राप्त कर चुके हैं और समस्त हिंदी साहित्यकारों, शोधार्थियों और अन्य हिंदी पाठकों के हृदय में हमेशा के लिए स्थान बना चुके हैं।

महादेवी वर्मा (1907 - 1987)

महादेवी वर्मा प्रतिनिधि छायावादी कवयित्री हैं। उनका छायावाद में दिया गया योगदान उनकी काव्य-कृतियाँ, यथा, नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, 'यामा', दीप-शिखा, अग्निरेखा, सप्तपर्णा आदि स्पष्तः प्रमाणित करती हैं। 1982 में काव्य संकलन 'यामा' के लिए आपको भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके काव्य की केन्द्रीय विषय-वस्तु 'वेदना' उनकी निम्न लिखित पंक्तियों में प्रामाणिक रूप में दृष्टिगोचर है-

कौन आया था न जाना
स्वप्न में मुझको जगाने;
याद में उन अँगुलियों के
है मुझे पर युग बिताने;
रात के उर में दिवस की चाह का शर हूँ!

शून्य मेरा जन्म था
अवसान है मूझको सबेरा;
प्राण आकुल के लिए
संगी मिला केवल अँधेरा;
मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ!

वीणा होगी मूक बजाने-
वाला होगा अंतर्धान,
विस्मृति के चरणों पर आ कर
लौटेंगे सौ सौ निर्वाण!

जब असीम से हो जायेगा

मेरी लघु सीमा का मेल,
देखोगे तुम देव! अमरता
खेलेगी मिटने का खेल!

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (1896 - 1961)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपने विद्रोही स्वभाव के कारण विद्रोही कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। उनका जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से भरा था। असीम साहित्यिक और काव्य क्षमताओं के होने के बाबजूद भी तत्कालीन समय में उनको अपेक्षित साहित्यिक सम्मान प्राप्त नहीं हो सका। परिमल, अनामिका, गीतिका, तुलसीदास, बेला, आराधना आदि उनके अमूल्य काव्य संग्रह हैं जो आज भी विश्व के अनेकों विश्वविद्यालयों में शोधार्थियों और काव्य प्रेमियों हेतु अध्ययनार्थ उपलब्ध हैं। आपने हिंदी साहित्य को मुक्त छंद की अवधारणा दी तथा आपके प्रगीत हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। औदात्य से परिपूर्ण आपके द्वारा रचित लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' हिंदी साहित्य की महती उपलब्धि है।

है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार,

कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार - बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।

जयशंकर प्रसाद (1889 - 1937)

दार्शनिकतापूर्ण अभिव्यक्ति, ऐतिहासिक परिवेश का प्रस्तुतीकरण जयशंकर प्रसाद के काव्य की अनुपम विशेषताऐं हैं। आपकी भाषा-शैली तत्सम शब्दों के प्रयोग के लिए जानी जाती है। हिंदी साहित्य का एक मात्र भाव प्रधान महाकाव्य 'कामायनी' एवं अन्य काव्य-संग्रह, यथा- आँसू, झरना, लहर, चित्राधार आदि उनके योगदान को प्रकट करते हैं।

समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था।

सुमित्रानंदन पंत (1900 - 1977)

'प्रकृति के सुकुमार' कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं सुमित्रानंदन पंत को उनकी काव्य चेतना मानवीय संवेदनाओं के लिए जाना जाता है। चिदम्बरा, लोकायतन, कला और बूढ़ा चाँद, वीणा, पल्लव, ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, युगवाणी आदि उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह, 1961 में प्राप्त पद्म भूषण तथा 1968 में चिदम्बरा के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मान आदि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के परिचय के लिए पर्याप्त है। आपकी रचनाओं में प्रकृति प्रेम सर्वोपरि है जिसको उन्होंने मानवीकरण के प्रयोग द्वारा अद्भुत तरीके से प्रस्तुत किया है।

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?
भूल अभी से इस जग को!
तज कर तरल तरंगों को,
इन्द्रधनुष के रंगों को,
तेरे भ्रू भ्रंगों से कैसे बिधवा दूँ निज मृग सा मन?

अध्ययन काउद्देश्य

1. हिंदी काव्य साहित्य में छायावादी काव्य का अध्ययन करना
2. हिंदी छायावादी काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों और विशेषताओं का उल्लेख करना
3. विभिन्न हिंदी छायावादी कवियों का संक्षिप्त परिचय प्रदान करना और उनके योगदान पर प्रकाश डालना

प्राक्कल्पना

1. हिंदी काव्य साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन है।
2. विशेषताओं के आधार पर हिंदी काव्य अनेकों वर्गों में विभक्त है।
3. छायावादी काव्य की पहचान अपनी विशिष्ट विशेषताओं और प्रवृत्तियों के आधार पर है।
4. जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का छायावादी काव्य में विशेष योगदान है।

साहित्य पुनरावलोकन

1. ''प्रेम-पथिक' का महत्त्व प्रसाद की व्यापक और उदार दृष्टि, सर्वभूत हित कामना, समता की इच्छा, प्रतिपद कल्याण करने का संकल्प, प्रकृति की गोद में सुख का स्वप्न आदि के बीजभाव के कारण तो है ही, प्रसाद ने प्रेम के अनुभूतिपरक अनेक रूपों का जो वर्णन किया है उसके कारण भी है'।[1]
2. 'सन् 1936 ई॰ में 'कामायनी' का प्रकाशन हुआ। इसकी रचना में प्रसाद ने पूरे सात वर्ष लगाये थे। इसकी पांडुलिपि तथा प्रथम संस्करण को मिलाकर पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि प्रसाद जी ने इसके पाठ में भी अनेक परिवर्तन करते हुए इसका स्वरूप निर्धारित किया था। महाकाव्य के परम्परागत विधान में सचेत रूप से कुछ छोड़ते और बहुत-कुछ जोड़ते हुए पन्द्रह सर्गों में विभक्त यह महाकाव्य विभिन्न दृष्टियों से जयशंकर प्रसाद की रचनात्मकता का शिखर तो है ही, काफी हद तक छायावादी काव्य दृष्टि की भी रचनात्मक निष्पत्ति है'।[2-3]
3. आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना

जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है।महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की।[4-5]

4. 'सुमित्रानंदन पंत का संपूर्ण साहित्य 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के आदर्शों से प्रभावित होते हुए भी समय के साथ निरंतर बदलता रहा है। जहां प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के रमणीय चित्र मिलते हैं वहीं दूसरे चरण की कविताओं में छायावाद की सूक्ष्म कल्पनाओं व कोमल भावनाओं के और अंतिम चरण की कविताओं में प्रगतिवाद और विचारशीलता के। उनकी सबसे बाद की कविताएं अरविंद दर्शन और मानव कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। पंत परंपरावादी आलोचकों और प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी आलोचकों के सामने कभी नहीं झुके। उन्होंने अपनी कविताओं में पूर्व मान्यताओं को नकारा नहीं। उन्होंने अपने ऊपर लगने वाले आरोपों को 'नम्र अवज्ञा' कविता के माध्यम से खारिज किया। वह कहते थे 'गा कोकिला संदेश सनातन, मानव का परिचय मानवपन। हिंदी साहित्य सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण(1961), ज्ञानपीठ(1968), साहित्य अकादमी, तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से अलंकृत किया गया। सुमित्रानंदन पंत के नाम पर कौसानी में उनके पुराने घर को, जिसमें वह बचपन में रहा करते थे, 'सुमित्रानंदन पंत वीथिका' के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत प्रयोग की वस्तुओं जैसे कपड़ों, कविताओं की मूल पांडुलिपियों, छायाचित्रों, पत्रों और पुरस्कारों को प्रदर्शित किया गया है।इसमें एक पुस्तकालय भी है, जिसमें उनकी व्यक्तिगत तथा उनसे संबंधित पुस्तकों का संग्रह है।[6-11]

शोधपद्धति

प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित शोधपद्धति हेतु-

1. हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन किया गया
2. हिंदी काव्य साहित्य के इतिहास का अध्ययन किया गया
3. हिंदी छायावादी काव्य का विशेष रूप से गहन अध्ययन किया गया
4. उपलब्ध परंपरागत और आधुनिक तथ्य-संकलन के स्रोतों से तथ्य संकलित किये गए
5. इंटरनेट की विभिन्न साइट्स पर उपलब्ध शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्रों में विषय सम्बन्धी सामग्री का अध्ययन और संकलन कर निष्कर्ष अध्ययन निष्कर्ष ज्ञात किया गया।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग के बाद जो, कविता धारा आई वो छायावादी कविता कहलाती है इसका काल सन 1917 से 1936 था। इस अवधि में छायावाद प्रमुख प्रवृत्ति रही थी। इस युग में कविता इतिवृत्तात्मकता को छोड़कर कल्पना लोक में उड़ान भरने लगी। हिंदी साहित्य काव्य-आन्दोलन के इतिहास में छायावाद को विशेष स्थान प्राप्त है और इसे खड़ी बोली काव्य का स्वर्ण युग माना गया है। छायावाद अपनी शिल्पगत और संवेदनागत विशेषताओं में अद्वितीय है। सौंदर्य चेतना, प्रकृति का चित्रण, रहस्यवाद, वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य चेतना आदि इसकी प्रमुख संवेदनागत विशेषताएँ हैं जबकि कोमल खड़ी बोली का प्रयोग, मुक्त और आँसू छन्दों की रचना, मानवीकरण जैसे नए अलंकारों का प्रयोग आदि इसकी प्रमुख शिल्पगत विशेषताएँ हैं।

इस युग के प्रतिनिधि कवि हैं: जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' , सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा। सभी कवि इस अवधि से इतने प्रभावित हुए कि काल अवधि का नाम छायावाद ही रख दिया गया। छायावाद को हम रहस्यवाद भी कह सकते हैं जहाँ कभी अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन मान कर चित्र में भाषा की व्यंजना करता है। इसे छायावाद की चित्र भाषा शैली भी कह सकते हैं।

आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है । पहला, रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ कवि का अभिप्राय काव्य वस्तु से होता है । कवि अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन मानकर चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजन करता है । दूसरा, काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में । छायावाद एक शैली विशेष है, जो लाक्षणिक प्रयोगों, अप्रस्तुत विधानों और अमूर्त उपमानों को लेकर चलती है । इसे चित्रभाषा शैली भी कहा जाता है ।

चार प्रमुख कवियों- महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत को छायावाद में चतुष्ट्य की उपाधि दी जाती है। इन चार कवियों के अलावा छायावाद के अन्य उल्लेखनीय कवि हैं-सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सियारामशरण गुप्त आदि जिनके काव्य योगदान के लिए हिंदी साहित्य जगत हमेशा इनका ऋणी रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-2008, पृष्ठ-13.*
2. *हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग-10, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; संस्करण-1971 पृ०-146*
3. *जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-2, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2014, पृष्ठ-v.*
4. *महादेवी वर्माः मॉडर्न मीरा लिटररी इंडिया. मूल (एचटीएमएल) से 21 मार्च 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 मार्च 2007.*
5. *"महादेवी का सर्जनः प्रतिरोध और करुणा". तद्भव. मूल (एचटीएमएल) से 22 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 अप्रैल 2007.*
6. *"हिंदी लिटरेचर" (अंग्रेज़ी में). सीज़ंस इंडिया. मूल (एचटीएम) से 14 अक्तूबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2007. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)*
7. *"ज्ञानपीठ अवार्ड" (अंग्रेज़ी में). वेबइंडिया123.कॉम. मूल (एचटीएम) से 15 सितंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2007. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)*
8. *"साहित्य एकेडमी अवार्ड एंड फ़ेलोशिप्स". साहित्य अकादमी. मूल (एचटीएम) से 4 जुलाई 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2007.*
9. *"सुमित्रानंदन पंत" (एचटीएम). इंडियानेटज़ोन.कॉम. मूल से 19 जून 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २७ नवंबर 2007.*
10. *"कौशानी" (एएसपी). मेड इन इंडिया. मूल से 27 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2007.*
11. *"सुमित्रानंदन पंत वीथिका" (एचटीएम). इंडिया9.कॉम. मूल से 29 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2007.*
12. *"सुमित्रानंदन पंत वीथिका". क्राफ़्ट रिवाइवल ट्रस्ट. मूल (एएसपी) से 30 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2007.*